संपादक का नोट

प्रभु की स्तुति हो। मेरे सभी पाठकों को हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के परम पवित्र और अतुलनीय नाम से अभिवादन करती हूँ।

कुलुस्सियों 1:27 ''जिन पर परमेश्वर ने प्रगट करना चाहा कि उन्हें ज्ञात हो कि अन्यजातियों में उस भेद की महिमा का मूल्य क्या है, और वह यह है कि मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है।''

प्रभु ने हमें अपना पात्र /पवित्र मंदिर क्यों बनाया? उन्होंने हमें अपना पात्र /पवित्र मंदिर बनाया ताकि हम अपने जीवन को अर्थपूर्ण और उनके योग्य बना सकें। महिमा और दया के धनी परमेश्वर ने हमें चुना है कि हम केवल उन्ही के लिए महिमा के पात्र बनें। उन्होंने हमारे जीवन को भर दिया है ताकि हम बदले में दूसरों के जीवन को अपनी बुद्धि और शक्ति से नहीं, बल्कि प्रभु की कृपा से भर सकें।

यीशु कहते हैं यूहन्ना 17:22 में ''वह महिमा जो तू ने मुझे दी मैं ने उन्हें दी है, कि वे वैसे ही एक हों जैसे कि हम एक हैं,'' हमारे अनुग्रहकारी परमेश्वर, यीशु मसीह, जो इस संसार में भेजे गए थे, परमेश्वर की दया, अनुग्रह और महिमा से भरे हुए थे। परमेश्वर ने हमें अपनी महिमा अपने पुत्र यीशु मसीह के द्वारा क्यों दी है? उन्होंने हमारे निमित्त ऐसा किया है, कि हम को अपना पवित्र मन्दिर और अपना पात्र बना लें; अपने जीवन को उस तरह से जीने के लिए नहीं जैसा हम चाहते हैं, बल्कि अपने जीवन को उस तरह से जीने के लिए जिस तरह से प्रभु चाहते है; ताकि हम 'एकता' के रूप में रहें, जैसे यीशु और पिता परमेश्वर 'एक' हैं। हमें केवल इतना करना है कि परमेश्वर के आने और हमारे जीवन पर शासन करने के लिए रास्ता बनाना है।

1 यूहन्ना 4:4 ''हे बालको, तुम परमेश्वर के हो, और तुम ने उन पर जय पाई है; क्योंकि जो तुम में है वह उस से जो संसार में है, बड़ा है।'' इस दुनिया पर राज करने वाला दुश्मन पराक्रमी है, लेकिन हमारा प्रभु सर्वशक्तिमान है! इसलिए, जो इस दुनिया में रहता है वह हमारे प्रभु से बड़ा नहीं है। जब परमेश्वर हमारे जीवन में प्रवेश करते है, तो यह हमारे जीवन में केवल आशीषों की शुरुआत है, और हम अपने जीवन में अधिक महिमा प्राप्त कर सकते हैं; लेकिन हमें याद रखना चाहिए कि सभी आशीषों का आधार हमारे स्वर्गीय पिता में हमारे विश्वास में निहित है। वचन कहता है, विश्वास के बिना हमारे परमेश्वर को प्रसन्न करना असंभव है। इफिसियों 2:8, ''क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है; और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान है,''

इसलिए, हमें, परमेश्वर की ओर से एक महान प्रतिज्ञा के साथ अब्राहम की पीढ़ी होने के नाते, अपने जीवन में कभी भी परमेश्वर को नहीं छोड़ना चाहिए। अपने जीवन के अंत तक, हमें प्रभु के साथ जुड़े रहना चाहिए और निश्चिंत रहना चाहिए कि केवल प्रभु ही हमें उन सभी चुनौतियों से जीत दिलाएंगे जो जीवन में हम सामना करते है। हमारा काम केवल विश्वास में दृढ़ रहना है!

हम फिर से मिलें तब तक,

पास्टर सरोजा म।

श्रेष्ठगीत 1:2 ''वह अपने मुँह के चुम्बनों से मुझे चूमे! क्योंकि तेरा प्रेम दाखमधु से उत्तम है,'' यहाँ वर्णित चुंबन 'प्रभु का चुंबन' है, और यह प्रभु की आत्मा का प्रतीक है। हम सभी के लिए यह महत्वपूर्ण है कि हम प्रार्थना करें और परमेश्वर से उसका चुम्बन मांगें। प्रभु हमें चूमते हैं और हमें अपनी आत्मा से भर देते हैं, और इसलिए, उनकी खुशी और शांति हम में रहती है। प्रभु द्वारा चुने गए शिष्य हमेशा प्रभु के चुंबन के लिए तरसते थे।

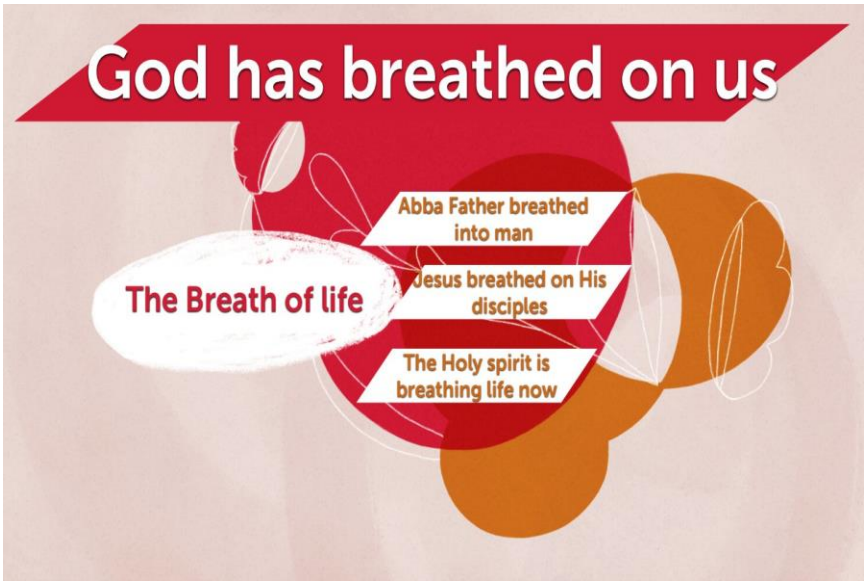

उन्होंने प्रार्थना की और परमेश्वर के चुंबन के लिए प्यासे थे। प्रभु यीशु ने उनकी इच्छा को पूरी किया यूहन्ना 20:22 में ''यह कहकर उसने उन पर फूँका और उनसे कहा, "पवित्र आत्मा लो।'' आत्मारिक रूप से, 'प्रभु का चुंबन' यह दर्शाता है कि यीशु ने चेलों पर सांस फूंकी। हम इंसान के रूप में अपने मुंह से किसी ऐसे व्यक्ति को फ्लाइंग किस देते हैं जिससे हम प्यार करते हैं। जब यीशु ने चेलों पर अपनी सांस फूंकी, तो वे उनकी पवित्र आत्मा से भर गए। परमेश्वर का चुंबन भी 'जीभ की आग' के रूप में आया। प्रेरितों के काम 2:3 ''और उन्हें आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दीं और उनमें से हर एक पर आ ठहरीं।'' पिन्तेकुस्त के दिन लोगों ने इसका अचनुभव किया, जब वे सब एक मन होकर एक स्थान पर इकट्ठे हुए, और वहाँ एकाएक आकाश से एक प्रचण्ड आँधी की आवाज़ आई, जो उस घर में जहाँ वे बैठे थे, भर गया। तब उन्हें आग के समान जीभें फटी हुई दिखाई दीं, और वह उन में से प्रत्येक पर आ बैठी।

प्रभु के चुंबन की इच्छा के लिए हमारे भीतर दो गुण होने चाहिए, हृदय की पवित्रता और प्रभु के चुंबन की इच्छा। जब तक हम अपने आप को पापों से शुद्ध नहीं कर लेते, हम परमेश्वर के चुंबन की अपेक्षा नहीं कर सकते। साथ ही, जैसा कि शिष्यों ने हमेशा परमेश्वर के चुंबन के लिए इच्छा और लालसा की थी, हमारे दिलों में भी प्रभु के चुंबन के लिए यह ज्वलंत इच्छा होनी चाहिए। यशायाह ने अपने पापों को परमेश्वर के

पवित्र मंदिर में स्वीकार किया, और वह शुद्ध और पवित्र किया गया, और परमेश्वर ने उसे चूमा। यशायाह 6:5–7 ''तब मैं ने कहा, "हाय! हाय! मैं नष्ट हुआ; क्योंकि मैं अशुद्ध होंठवाला मनुष्य हूँ; और अशुद्ध होंठवाले मनुष्यों के बीच में रहता हूँ, क्योंकि मैं ने सेनाओं के यहोवा महाराजाधिराज को अपनी आँखों से देखा है!" तब एक सारप हाथ में अँगारा लिये हुए, जिसे उसने चिमटे से वेदी पर से उठा लिया था, मेरे पास उड़ कर आया। उसने उससे मेरे मुँह को छूकर कहा, "देख, इसने तेरे होंठों को छू लिया है, इसलिये तेरा अधर्म दूर हो गया और तेरे पाप क्षमा हो गए।'' परमेश्वर के इस चुंबन के बाद, यशायाह परमेश्वर का एक महान नबी बन गया। इसलिए, इससे पहले कि हम परमेश्वर के चुंबन की इच्छा भी करें, हमें पहले अपने आप को अपने पापों से शुद्ध करने की आवश्यकता है। दूसरा, हमें परमेश्वर के चुंबन की इच्छा करनी चाहिए। रोमियों 5:5 ''और आशा से लज्जा नहीं होती, क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है।'' प्रभु के चुंबन की इच्छा करने में कभी भी शर्मिंदा न हों। हमें परमेश्वर के निकट आने और उनके चुंबन की इच्छा करने की आवश्यकता है। इस दुनिया में, हम ऐसे महान नेताओं या मशहूर हस्तियों को देखना चाहते हैं जो केवल नश्वर हैं। हम किसी सेलिब्रिटी या नेता की एक झलक पाने के लिए उनके करीब आने के लिए भीड़ के साथ सभी बाधाओं के खिलाफ लड़ते हैं। ज़रा सोचिए अगर हमारे मन में भी हमारे प्रभु यीशु मसीह के लिए वैसी ही लालसा है; उसका प्यार और चुंबन पाकर हम कितने धन्य होंगे। यह हमेशा हमारे जीवन की इच्छा का हिस्सा होना चाहिए।

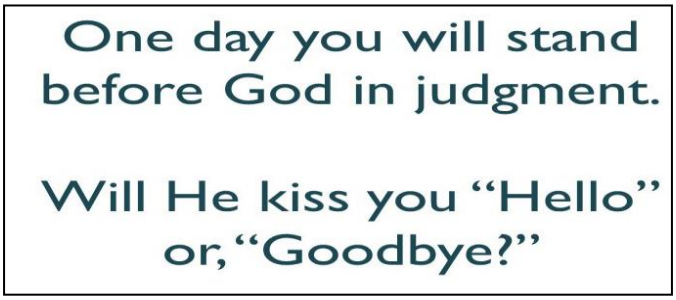

कुलुस्सियों 1:20 ''और उस के क्रूस पर बहे हुए लहू के द्वारा मेलमिलाप करके, सब वस्तुओं का उसी के द्वारा से अपने साथ मेल कर ले, चाहे वे पृथ्वी पर की हों चाहे स्वर्ग में की।'' कलवारी के क्रूस पर यीशु मसीह के बलिदान के कारण, स्वर्ग और पृथ्वी में सभी चीजें शुद्ध और मेल–मिलाप हो जाती हैं। हमें यीशु के लहू के द्वारा शांति मिली है। हममें से कोई भी प्रभु के करीब जाने की हिम्मत नहीं कर सकता, क्योंकि उनका प्रकाश एक उज्ज्वल चमकता हुआ प्रकाश है, और हम उससे अंधे हो सकते हैं। हम साधारण इंसान हैं और कभी भी प्रभु के करीब नहीं पहुंच सकते। फिर भी, क्रूस पर अपने बलिदान के कारण, यीशु ने स्वर्ग और पृथ्वी की सभी चीजों का मेल कर लिया है और अपने रक्त और बलिदान के माध्यम से शांति स्थापित की है। हम जानते हैं कि जब पौलुस शाऊल ही था, एक बार दमिश्क के मार्ग में, परमेश्वर की ओर से शाऊल पर एक चमकीला प्रकाश चमका, और शाऊल इस प्रकाश से अंधा हो गया था। निश्चित

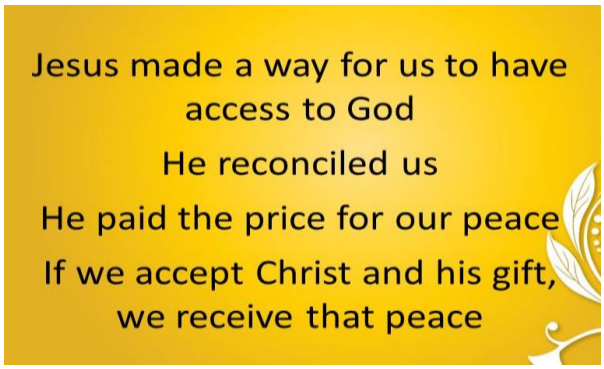

रूप से, कोई भी परमेश्वर के करीब नहीं आ सकता कारण हैं उनका पवित्र प्रकाश जो उनसे निकलता है। हमारे प्रभु यीशु मसीह को क्रूस पर अपना जीवन बलिदान करना पड़ा ताकि हम परमेश्वर का चुंबन प्राप्त कर सकें और हम पर उनकी सांस ले सकें। यदि यीशु ने अपने जीवन का बलिदान नहीं दिया होता, तो हम परमेश्वर को पुकार भी नहीं पाते। हम जानते हैं कि स्वर्ग में स्वर्गदूत लगातार परमेश्वर की महिमा और प्रशंसा करते हैं, 'पवित्र, पवित्र, पवित्र... सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर ,' गाते हुए, अपने पैरों को उनके पंखों से छिपाये हुए। हमारा परमेश्वर स्वर्ग में इतना शक्तिशाली परमेश्वर है, फिर भी वह आपके और मेरे लिए इस धरती पर उतरे। उन्हें कलवारी के क्रूस पर सूली पर चढ़ाया गया और शर्मिंदा किया गया, ताकि आज हम परमेश्वर का चुंबन मांग सकें, और परमेश्वर हम पर अपनी सांस फूंकेंगे और हमें अपनी पवित्र आत्मा से भर देंगे।

बाइबल में, हम पाँच प्रकार के चुंबन देखते हैं:

1) आदर और सम्मान का चुम्बनः 1 शमूएल 10:1 ''तब शमूएल ने एक कुप्पी तेल लेकर उसके सिर पर उंडेला, और उसे चूमकर कहा, "क्या इसका कारण यह नहीं कि यहोवा ने अपने निज भाग के ऊपर प्रधान होने को तेरा अभिषेक किया है?'' शमूएल ने अभिषेक के तेल से शाऊल के सिर का अभिषेक किया और उसे चूमा। शमूएल परमेश्वर का एक शक्तिशाली अभिषिक्त सेवक था; उस पर परमेश्वर का अभिषेक था। शाऊल को उसके द्वारा यहोवा का अभिषेक प्राप्त करने के लिए, शमूएल को शाऊल को चूमना था। श्रेष्ठगीत 1: 2 ''वह अपने मुँह के चुम्बनों से मुझे चूमे! क्योंकि तेरा प्रेम दाखमधु से उत्तम है,'' यहाँ हम एक बार फिर पढ़ते हैं कि परमेश्वर का चुंबन पवित्र आत्मा का अभिषेक है।

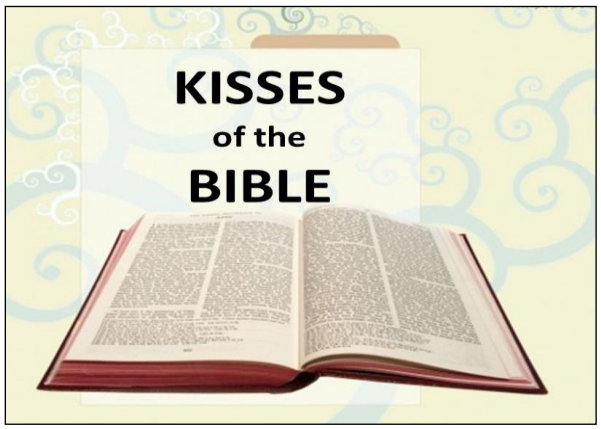

2) प्यार का चुंबनः जब हम किसी से प्यार करते हैं और लंबे समय के बाद उनसे मिलते हैं, तो हम उन्हें प्यार से चूमते हैं। उत्पत्ति 27:26–27 ''तब उसके पिता इसहाक ने उससे कहा, "हे मेरे पुत्र, निकट आकर मुझे चूम।" उसने निकट जाकर उसको चूमा; और उसने उसके वस्त्रों का सुगन्ध पाकर उसको यह आशीर्वाद दिया, "देख, मेरे पुत्र की सुगन्ध जो ऐसे खेत की सी है जिस पर यहोवा ने आशीष दी हो;'' हालाँकि याकूब ने अपने पिता इसहाक को धोखा दिया, फिर भी याकूब को आशीर्वाद देना परमेश्वर की इच्छा थी। जब इसहाक ने याकूब को चूमा, तो परमेश्वर की सुगन्ध याकूब में फैल गई।

3) विश्वासघात/लाभ का चुंबनः मत्ती 26:49 ''और तुरन्त यीशु के पास आकर कहा, "हे रब्बी, नमस्कार!" और उसको बहुत चूमा।'' यहूदा इस्करियोती ने अधिकारियों को सूचित किया था कि जिसे वह चूमेगा उसे गिरफ्तार किया जाएगा, क्योंकि यहूदा ने केवल तीस चांदी के सिक्कों के लिए यीशु को धोखा देने की योजना बनाई थी।

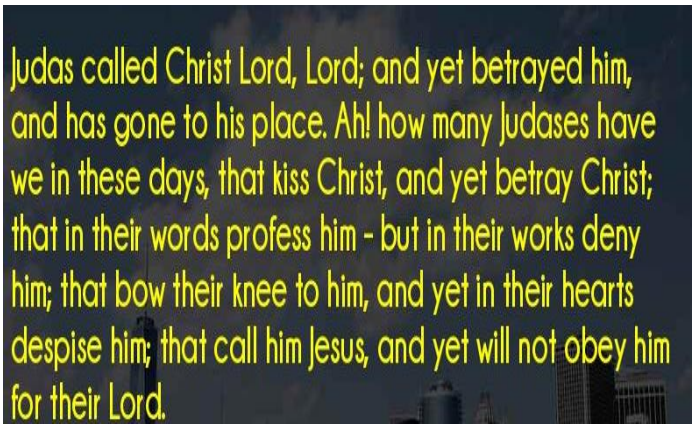

4) मूर्तिपूजा / जादू टोना का चुंबनः होशे 13:2 ''अब वे लोग पाप पर पाप बढ़ाते जाते हैं, और अपनी बुद्धि से चाँदी ढालकर ऐसी मूरतें बनाते हैं जो कारीगरों ही से बनीं। उन्हीं के विषय लोग कहते हैं, जो नरमेध करें, वे बछड़ों को चूमें!'' यह मूर्तिपूजा का चुंबन है।

5) एकता का चुंबन: हम एक और विशेष चुंबन भी देखते हैं जो 'एकता का चुंबन' है। हम सभी उड़ाऊ पुत्र की कहानी जानते हैं। छोटे बेटे ने अपने पिता से संपत्ति का हिस्सा लिया और दूर देश के लिए घर छोड़ दिया। इस्राएल में, जब पिता जीवित होता है, तो पुत्र संपत्ति में अपना हिस्सा नहीं मांग सकता। उनकी व्यवस्था के अनुसार यह बहुत बड़ा पाप है। तब भी, पिता ने संपत्ति के हिस्से के साथ भाग किया, जब बेटे ने उससे वही मांगा। बेटे ने अपना सारा पैसा अपने दोस्तों और खुद पर खर्च कर दिया, और बाद में उसके पास कुछ भी नहीं बचा। अंत में, उसने सूअर का खाना खाकर सूअरों को संभालने का काम किया। उस समय, उसे अपने पिता के घर की बहुतायत से याद आई, और उसने पश्चाताप किया और अपने पिता के किराए के नौकरों में से एक बनने की इच्छा रखते हुए अपने पिता के घर लौट आया। उसके पिता ने उसे दूर से देखा और उसका स्वागत करने और उसे चूमने के लिए दौड़ा। यह 'एकता का चुम्बन' है। लूका 15:11–20 ''फिर उसने कहा, "किसी मनुष्य के दो पुत्र थे। उनमें से छोटे ने पिता से कहा, 'हे पिता, सम्पत्ति में से जो भाग मेरा हो वह मुझे दे दीजिए।' उसने उनको अपनी सम्पत्ति बाँट दी। बहुत दिन न बीते थे कि छोटा पुत्र सब कुछ इकट्ठा करके दूर देश को चला गया, और वहाँ कुकर्म में अपनी सम्पत्ति उड़ा दी। जब वह सब कुछ खर्च कर चुका, तो उस देश में बड़ा अकाल पड़ा, और वह कंगाल हो गया। 15 इसलिये वह उस देश के निवासियों में से एक के यहाँ जा पड़ा। उस ने उसे अपने खेतों में सूअर चराने के लिये भेजा। और वह चाहता था कि उन फलियों से जिन्हें सूअर खाते थे, अपना पेट भरे; और उसे कोई कुछ नहीं देता था। जब वह अपने आपे में आया तब कहने लगा, 'मेरे पिता के कितने ही मजदूरों को भोजन से अधिक रोटी मिलती है, और मैं यहाँ भूखा मर रहा हूँ। मैं अब उठकर अपने पिता के पास जाऊँगा और उससे कहूँगा कि पिता जी, मैं ने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया है। अब इस योग्य नहीं रहा कि तेरा पुत्र कहलाऊँ, मुझे अपने एक मजदूर के समान रख ले।' "तब वह उठकर, अपने पिता के पास चला : वह अभी दूर ही था कि उसके पिता ने उसे देखकर तरस खाया, और दौड़कर उसे गले लगाया, और बहुत चूमा।'' हम कल्पना कर सकते हैं कि उसके पिता के एक चुंबन ने उसके बेटे के दिल में शांति बहाल कर दी होगी! बस एक चुम्बन ने बेटे को एक बार फिर पिता के प्यार का भरोसा दिलाया होगा। यह 'एकता का चुंबन' कितने घावों को भर देता। हमारे जीवन में भी, जब हम परमेश्वर के पास लौटते हैं और अपने पापों के लिए क्षमा मांगते हैं, तो हमें परमेश्वर से 'एकता का चुंबन' प्राप्त होता है, और हम वास्तव में धन्य और पवित्र आत्मा से भर जाते हैं। हो सकता है कि हमने प्रभु को बहुत दुख पहुंचाया हो, लेकिन जब हम उनसे क्षमा मांगते हैं, तो हमारे जीवन में शांति बहाल हो जाती है। 2 कुरिन्थियों 5:20 ''इसलिये, हम मसीह के राजदूत हैं; मानो परमेश्वर हमारे द्वारा विनती कर रहा है। हम मसीह की ओर से निवेदन करते हैं कि परमेश्वर के साथ मेलमिलाप कर लो।'' जब हम मसीह के राजदूत होंगे, तो परमेश्वर हमें अपना 'एकता का चुम्बन' देंगे और एक बार फिर वह हमारे साथ अपना मेल कर लेंगे।

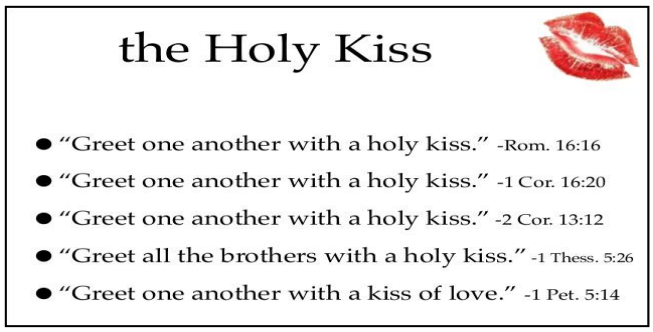

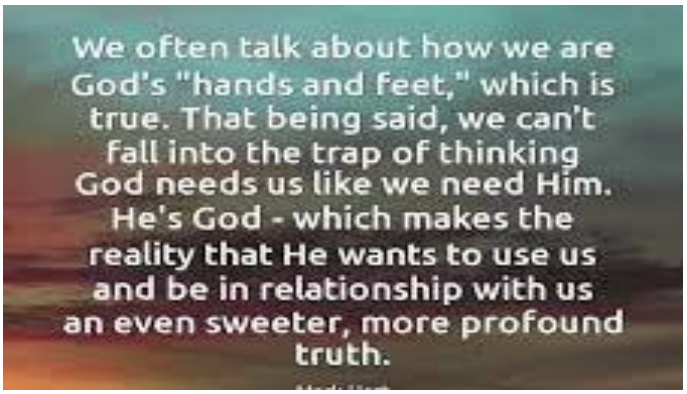

परमेश्वर का चुंबन भी परमेश्वर के वचन का प्रतीक है। मत्ती 4:4 ''यीशु ने उत्तर दिया : "लिखा है, 'मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है, जीवित रहेगा।' '' हमारे

जीने के लिए केवल रोटी ही से नहीं, पर परमेश्वर के वचन से भी जो परमेश्वर के मुख से निकलता है; हमें शांति, समझ, ज्ञान और उसके साथ परमेश्वर से एकता भी प्रदान करता है।

मेरे निजी जीवन में एक समय था जब मैं एक अनाथ के रूप में थी। मैं इस पवित्र मंदिर में परमेश्वर के वचन के लिए प्यासी था। हालाँकि, एक हिंदू परिवार से होने के कारण, जब से मैंने यीशु मसीह को अपने प्रभु के रूप में प्राप्त किया था, तब से बहुत अशांति थी। मेरे पति मुझे बहुत परेशान करते थे। एक दिन, मैं इस पवित्र मंदिर में आई, निराश और विचार कर रही थी कि मुझे अपने पति के हाथों और कितने साल भुगतने होंगे। उस समय, इस मंदिर में एक अतिथि उपदेशक था और उसने पवित्र बाइबल के इस वचन को पढ़ा – यशायाह 43:18–19 ''"अब बीती हुई घटनाओं का स्मरण मत करो। न प्राचीनकाल की बातों पर मन लगाओ। देखो, मैं एक नई बात करता हूँ; वह अभी प्रगट होगी, क्या तुम उससे अनजान रहोगे? मैं जंगल में एक मार्ग बनाऊँगा और निर्जल देश में नदियाँ बहाऊँगा।'' उस दिन, मैंने अपने जीवन में 'प्रभु का चुंबन' प्राप्त किया और मेरा जीवन पूरी तरह से बदल गया। वचन 'अभी' कहता है, यह भविष्य में कोई समय नहीं देता है। उस क्षण से मेरा जीवन वास्तव में इस वचन से मजबूत हुआ था। सचमुच, 'परमेश्वर के वचन' में जीवन है। उस दिन से यहोवा ने मेरे लिए जंगल में और मरुभूमि में नदियों का मार्ग बनाया।

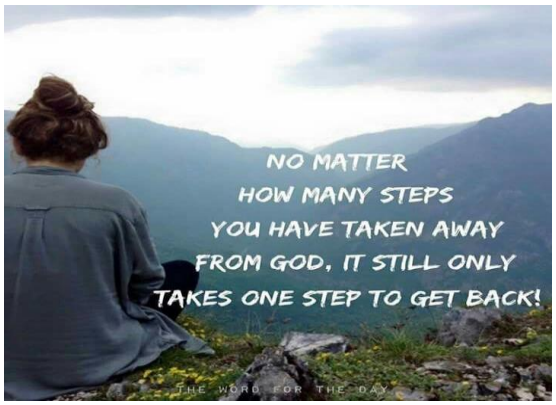

प्रभु का चुंबन हमारे जीवन को बदल देता है। श्रेष्ठगीत 1:2 ''वह अपने मुँह के चुम्बनों से मुझे चूमे! क्योंकि तेरा प्रेम दाखमधु से उत्तम है,'' वचन कहता है कि मेरे लिए परमेश्वर का चुम्बन दाखमधु से उत्तम है। दाखलता प्रभु और हमारे साथ 'नई वाचा' का प्रतीक है। यह यीशु का लहू है। लेकिन 'परमेश्वर का चुंबन' दाखलता से भी बढ़कर है, नई वाचा है। उड़ाऊ पुत्र ने तब पश्चाताप किया जब परमेश्वर ने देश में अकाल भेजा, जिसमें उसे जीवित रहने के लिए सूअर का खाना खाना पड़ा। इससे उसे अपने पिता के घर को याद करने में मदद मिली, और उसने पश्चाताप किया और अपने पिता के घर लौट आया। यदि हम पाप करके उससे बहुत दूर चले गए हैं, तो आज हमें भी अपने पिता के पास लौटना चाहिए। हमारे प्रभु का प्यार हमारे खालीपन को भर देंगे और हमारे जीवन में खुशी और शांति वापस लाएंगे। प्रभु परमेश्वर हमें अपने वचन और अपनी आत्मा से चूमते हैं, और हम उससे शक्ति प्राप्त करते हैं।

आइए हम परमेश्वर के वचन के माध्यम से चुंबन का एक और रूप देखें। 1 पतरस 2:1–2 ''इसलिये सब प्रकार का बैरभाव और छल और कपट और डाह और निन्दा को दूर करके, नये जन्मे हुए बच्चों के समान निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करो, ताकि उसके द्वारा उद्धार पाने के लिये बढ़ते जाओ,'' जैसे एक शिशु या नवजात शिशु अपनी माँ के दूध से बढ़ता है, वैसे ही हमें भी परमेश्वर के वचन से बढ़ना चाहिए। हमें इस दुनिया की बुराई को पीछे छोड़ना चाहिए, अपने जीवन को इस दुनिया के लोगों से अलग करना चाहिए, और परमेश्वर के वचन के साथ आगे बढ़ना चाहिए। इसके लिए हमें परमेश्वर के वचन के लिए एक लालसा और इच्छा रखने की ज़रूरत है, जैसे जब एक नवजात बच्चा चिल्लाता है, तो पूरे घर को दूध पिलाने की इच्छा होती है! श्रेष्ठगीत की पुस्तक के प्रत्येक पद का आत्मिक प्रकाशन बहुमूल्य और अमूल्य है। केवल परमेश्वर ही इस महान

प्रकाशन को हम पर प्रकट कर सकते है। हमें चक के देखना चाहिए कि हमारा प्रभु अच्छा है। परमेश्वर के वचन का स्वाद मधु और छत्ते से भी मीठा होगा। भजन संहिता 19:10 ''वे तो सोने से और बहुत कुन्दन से भी बढ़कर मनोहर हैं; वे मधु से और टपकनेवाले छत्ते से भी बढ़कर मधुर हैं।''

भजन संहिता 119:103 ''तेरे वचन मुझ को कैसे मीठे लगते हैं, वे मेरे मुँह में मधु से भी मीठे हैं!'' परमेश्वर का चुम्बन सोने से भी अधिक कीमती है, और मधु और छत्ते से भी मीठा है। जो लोग परमेश्वर के वचन की इच्छा करते हैं, जैसे कि एक नवजात शिशु अपनी माँ के दूध की इच्छा रखता है, वह बढ़ेगा और परमेश्वर द्वारा मजबूत किया जाएगा। जितना अधिक हम वचन को पढ़ते हैं, उतना ही अधिक हम परमेश्वर के द्वारा प्रेम और बलवन्त होते जाएंगे। प्रभु का सिर्फ एक चुंबन हमारे लिए उनके अपार प्रेम को प्रकट कर सकता है।

हमें शैतान के चुम्बन से भी सावधान रहना चाहिए, जैसे कि जब यहूदा इस्करियोती ने अपने चुम्बन के द्वारा परमेश्वर को धोखा दिया, "हे रब्बी, नमस्कार!"। यीशु ने यहूदा इस्करियोती से दुखी होकर कहा लूका 22:48 में ''यीशु ने उससे कहा, "हे यहूदा, क्या तू चूमा लेकर मनुष्य के पुत्र को पकड़वाता है?''

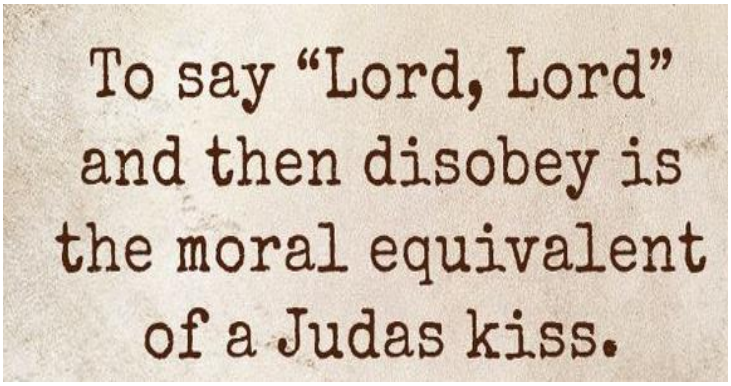

बुद्धिमान राजा सुलैमान ने एक जवान लड़के के बारे में बात की, जो उसकी मूर्खता के कारण नष्ट हो गया था। नीतिवचन 7:13–23 ''तब उसने उस जवान को पकड़कर चूमा, और निर्लज्जता की चेष्टा करके उससे कहा, "मुझे मेलबलि चढ़ाने थे, और मैं ने अपनी मन्नतें आज ही पूरी की हैं। इसी कारण मैं तुझ से भेंट करने को निकली, मैं तेरे दर्शन की खोजी थी, और अभी पाया है। मैं ने अपने पलंग के बिछौने पर मिस्र के बेलबूटेवाले कपड़े बिछाए हैं; मैं ने अपने बिछौने पर गन्धरस, अगर और दालचीनी छिड़की है। इसलिये अब चल हम प्रेम से भोर तक जी बहलाते रहें; हम परस्पर की प्रीति से आनन्दित रहें। क्योंकि मेरा पति घर में नहीं है; वह दूर देश को चला गया है; वह चाँदी की थैली ले गया है; और पूर्णमासी को लौट आएगा।" ऐसी बातें कह कहकर, उसने उसको अपनी प्रबल माया में फँसा लिया; और अपनी चिकनी चुपड़ी बातों से उसको अपने वश में कर लिया। वह तुरन्त उसके पीछे हो लिया, जैसे बैल कसाईदृखाने को, या जैसे बेड़ी पहिने हुए कोई मूढ़ ताड़ना पाने को जाता है। अन्त में उस जवान का कलेजा तीर से बेधा जाएगा; वह उस चिड़िया के समान है जो फन्दे की ओर वेग से उड़े और न जानती हो कि उसमें मेरे प्राण जाएँगे।''

हमें बाइबल में वर्णित विभिन्न चुंबनों के मामले में बहुत सावधान रहना चाहिए। हम जानते हैं कि इनमें से कुछ चुंबन हमारे जीवन को तबाह कर सकते हैं। अकेले 'प्रभु के चुंबन' की इच्छा रखें, और इस दुष्ट दुनिया के अन्य सभी चुंबनों को पीछे छोड़ दें। प्रभु का चुंबन हमारे जीवन को बदल देता है और हमें मजबूत करता है,

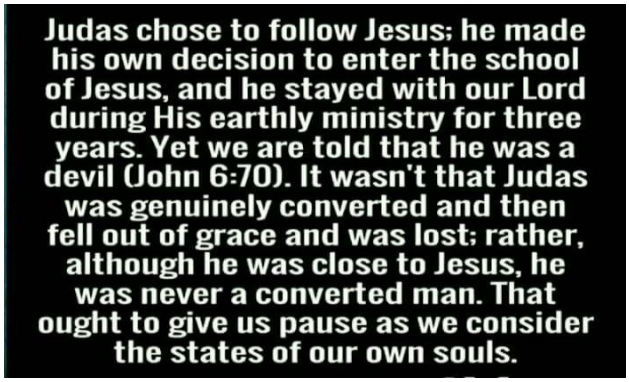

और हम अपने जीवन में शांति के साथ धन्य हैं। परमेश्वर अब हमारे लिए जंगल में रास्ता बना सकता है। रोमियों 8:8 ''और जो शारीरिक दशा में हैं, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते।'' हमारे लिए यह जानना महत्वपूर्ण है कि हम कभी भी देह में परमेश्वर को प्रसन्न करने में सक्षम नहीं होंगे। बाइबिल की शुरुआत से, हमने देखा है कि परमेश्वर का प्रेम मानवजाति पर अपार है। यह इस प्रेम के कारण है कि वह हमें शाप देते है और दंड देते है। फिर भी, परमेश्वर वह है जो हमारे घावों पर मरहम भी लगाएंगे और हमें चंगा भी करेंगे।

मूसा परमेश्वर से भेंट करने और इस्राएलियों के लिए उनकी आज्ञाओं को वापस लाने के लिए सीनै पर्वत पर चढ़ गया। सीधे तौर पर, शैतान ने लोगों के बीच भ्रम पैदा करना शुरू कर दिया और उनके दिलों में डर पैदा कर दिया कि मूसा वापस नहीं आएगा। लोगों ने हारून पर दबाव डाला कि वे उन्हें देवता बना दें। हारून ने उन से उनका सोना मांगा, और उन्हें आग में झोंक दिया, और एक बछड़े को गढ़ी हुई मूरत की नाईं गढ़ा, कि वे दण्डवत करें और मूर्तिपूजा करें। हारून परमेश्वर के सामने नंगा था, और यह पाप परमेश्वर और मूसा के सामने प्रगट हुआ। निर्गमन 32:19 ''छावनी के पास आते ही मूसा को वह बछड़ा और नाचना दिखाई पड़ा, तब मूसा का कोप भड़क उठा, और उसने तख़्तियों को अपने हाथों से पर्वत के नीचे पटककर तोड़ डाला।''

मूर्तिपूजा / जादू टोना के चुम्बन से बचें, क्योंकि हम सभी प्रभु के सामने नग्न हैं। हमें विश्वास के साथ परमेश्वर के सामने खड़े होने में सक्षम होना चाहिए जब वह हमें एक बार फिर से अपने साथ ले जाने के लिए आता है। हम सभी को परमेश्वर के वचन की इच्छा करनी चाहिए; जैसे मछलियाँ जल के बिना जीवित नहीं रह सकतीं, और जैसे नवजात शिशु अपनी माँ के दूध के लिए हर समय प्यासे रहते हैं। परमेश्वर के वचन की निरंतर अभिलाषा करते रहो जो सोने से भी अधिक कीमती है और मधु और छत्ते से भी मीठा है। परमेश्वर आज हमें चूम सकता है, और परमेश्वर का वह चुंबन अब हमारे जीवन को बदल सकता है!

प्रभु इस वचन को आशीष दें!

पास्टर सरोज म।